प्रधानमंत्री द्वारा भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन स्कूल आई.आई.टी. का राष्ट्र को समर्पण

दिनांक 20 मार्च, 2006
नई दिल्ली

आज मुझे भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन स्कूल राष्ट्र को समर्पित करते हुए बेहद खुशी हो रही है। मैं इस पहल के लिए सुनील भारती मित्तल और भारती फाउण्डेशन को बधाई देता हूँ जो उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी का एक चमकता उदाहरण है। यदि भारत को विश्व की बढ़ती ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में एक बड़ी भूमिका अदा करनी है तो हमें अपनी अनुसंधान और विकास क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इस तरह की भागीदारियों पर और अधिक जोर देना होगा और मुझे उम्मीद है कि भारती स्कूल ने इस दिशा में अपनी पहचान बना ली है।

देवियो और सज्जनो,

भारती दूरसंचार की जबरदस्त सफलता पिछले दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के बदलाव का प्रतीक है। जब हमने नई आर्थिक नीतियों की शुरूआत की थी तो हमारा मकसद यही था कि सुनील और उनके जैसे अन्य हमारे उद्यमियों में छिपी रचनात्मकता और उद्यमशक्ति को आगे लाया जाए।

भारत की दूरसंचार क्रांति की सफलता की विश्व भर में काफी प्रशंसा हुई है। अभी बहुत पहले की बात नहीं है जब एक टेलीफोन कनेक्शन लेने के लिए हमें लम्बी-लम्बी लाइनों में खड़ा होना पड़ता था और कुछ लोगों को तो रिश्वत तक देनी पड़ती थी। मुझे याद है कि जनता में एक आम धारणा थी कि अपने बच्चे के जन्म के समय टेलीफोन कनेक्शन के लिए पंजीकरण कराओ ताकि जब वह वयस्क हो जाए तो आपको उस समय टेलीफोन कनेक्शन मिल सके। यह स्वर्गीय राजीव गांधी जी की कल्पना दृष्टि थी और सैम पित्रोदा जैसे लोगों का उत्साह था और सुनील मित्तल जैसे व्यावसायियों की मेहनत थी जिसने हमारे दूरसंचार परिदृश्य का रूप बदलकर रख दिया। 1998 में एक हजार लोगों में दो से भी कम टेलीफोन कनेक्शन वाली स्थिति से निकलकर आज हम उस मुकाम तक पहुंच गए हैं जहां कम से कम लगभग दस कनेक्शन प्रति एक हजार की आबादी के बीच उपलब्ध है। इस क्षेत्र में ज्यादा विस्तार मोबाइल टेलीफोनों के बढ़ते इस्तेमाल से हुआ है। मैं समझता हूँ कि आज लैण्डलाइन उपभोक्ताओं के मुकाबले मोबाइल फोन इस्तेमाल करने वाले लोग ज्यादा हैं।

दूरसंचार के क्षेत्र में आई इस क्रांति ने हमारी अर्थव्यवस्था की कुशलता को बढ़ाने में योगदान दिया है। इसने लेन-देन की लागतों में कमी की है, इसकी वजह से पूरे देश में दूरसंचार संपर्कों की स्थिति काफी बेहतर हुई है। इससे भारतीय लोग एक दूसरे के और नजदीक आए हैं। यह दूरसंचार क्षेत्र आय और रोजगार दोनों ही में वृद्धि कर रहा है। निश्चित रूप से इस वृद्धि से व्यवसाय तथा रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। भारत पूरी दुनिया में दूरसंचार उद्योग के लिए एक बड़े आधार के रूप में उभरकर सामने आया है और हम इस उद्योग का और अधिक विकास करना चाहते हैं।

देवियो और सज्जनो,

हालांकि हम दूरसंचार क्षेत्र में मिली इस सफलता से खुश हैं लेकिन मैं मानता हूं कि इस क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए अभी काफी कुछ किया जाना बाकी है। इस समय एक मुद्दा जो हमारे सामने है वह है-स्पैक्ट्रम एलोकेशन का प्रश्न और कन्वर्जेंस की चुनौती। हम वाणिज्यिक दूरंसचार आपरेटरों के इस्तेमाल के लिए निरंतर सरकारी इस्तेमाल से अतिरिक्त स्पैक्ट्रम को मुक्त करने के मुद्दे का समाधान ढूंढ़ रहे हैं ताकि इस महत्वपूर्ण संसाधन की कमी के कारण दूरसंचार के इस गतिशील क्षेत्र के विकास के रास्ते में कोई बाधा न आए। मैं मानता हूं कि बदलती प्रौद्योगिकीयों के कारण भविष्योन्मुख दृष्टिकोण अपनाए जाने की जरूरत है। मैं इस बात को भी स्वीकार करता हूं कि कन्वर्जेंस का अपना एक तर्क है और सरकारी नीतियों में जमीनी हकीकतों का ध्यान रखा जाना होगा। कोई भी नीति यदि बाजार और प्रौद्योगिकीय वास्तविकताओं के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकती तो वह प्रभावी नहीं हो सकती।

यदि हमें दूरसंचार कनेक्टिविटी में वांछनीय स्तर की प्रगति हासिल करना है तो हमें इस क्षेत्र से हुए जबरदस्त विकास को अवश्य बनाए रखना होगा। तथापि, हमें यह भी देखना होगा कि जहां एक ओर, हमने इस क्षेत्र में समग्र रूप से प्रभावी प्रगति हासिल कर ली है वहीं दूसरी ओर, अभी भी ग्रामीण इलाकों में टेली-घनत्व प्रति एक हजार व्यक्तियों के पीछे मात्र दो है जो अभी भी बहुत कम है। इस क्षेत्र में जो कुछ भी विकास हुआ है वह अधिकांशतः शहरी क्षेत्रों में ही हुआ है। यदि हमें अगले दो वर्षों में उपभोक्ता आधार को दुगुना करना है और हम विकास को गति देने के लिए शहरी बाजार पर ही मुख्य रूप से निर्भर रहे , तो यह विगत के मुकाबले में कहीं कठिन कवायद होगी। यदि हमें अपना उपभोक्ता आधार अगले वर्ष की समाप्ति पर 250 मिलियन तक ले जाना है तो हमें ऐसे तरीकों को अपनाना होगा जो ग्रामीण क्षेत्रों में टेली-घनत्व को बढ़ाकर दस या उससे भी अधिक कर देंगे। आईआईटी दिल्ली में भारती स्कूल जैसी संस्थाओं को इन नए तरीकों की पहचान करने और उन्हें विकसित करने की ओर ध्यान देना होगा।

देवियों और सज्जनो,

दूरसंचार उद्योग के तीव्र विकास से मानव शक्ति की मांग भी बढ़ गई है। अभी तक भारत, दूरसंचार प्रौद्योगिकी में हार्डवेयर और साफ्टवेयर दोनों ही क्षेत्रों में एशिया में अन्य औद्योगिकीकृत अर्थव्यवस्थाओं से पीछे रहा है। हमारी सरकार दूरसंचार के इन दोनों ही पहलुओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

मुझे उम्मीद है कि भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन स्कूल बड़ी संख्या में ऐसे प्रौद्योगिकी अग्रेता और प्रबंधक तैयार करेगा जो इस क्षेत्र के विकास को संभाल सकते हैं। मुझे खासतौर से इस बात की खुशी है कि भारती स्कूल आई.आई.टी. दिल्ली में स्थित है। तकनीकी अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में निजी क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र का इस तरह से साथ आना एक सुखद घटना है। मैं चाहूंगा कि हमारे विश्वविद्यालय और शैक्षिक संस्थाएं धन तथा नये-नये विचारों के लिए और अधिक निजी क्षेत्र की तरफ जाएं। शैक्षणिक संस्थाओं और यहां से निकलने वाले छात्रों को खपाने वाले उद्योगों के बीच गहन संबंध, दोनों के लिए लाभदायी हो सकता है।

मैंने हमेशा ही यह महसूस किया है कि हम दानशीलता और ट्रस्टों के जरिए अपने देश में विश्वविद्यालीय शिक्षा और अनुसंधान को धन मुहैया कराने हेतु काफी कम प्रयास करते हैं जब कि अमरीका और यूरोप में स्थिति ठीक इसके विपरीत है। हम जैसे-जैसे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण करते जा रहे हैं तो आगे हमें उच्च शिक्षा की मांग में अब काफी वृद्धि देखने को मिलेगी। हमारी सरकार ने सभी स्तरों पर शिक्षा के लिए वित्तीय आबंटनों में काफी वृद्धि की है। तथापि, प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के लिए धन मुहैया कराना सरकार की प्राथमिकता बनी रहेगी। मैं निजी क्षेत्र से उम्मीद करता हूं कि वे विश्वविद्यालयी स्तर पर और खासकर तकनीकी शिक्षा में एक बड़ी भूमिका निभाएगा।

हमारी अर्थव्यवस्था में जबरदस्त वृद्धि होने से उच्च गुणवत्ता वाली विश्वविद्यालयी शिक्षा और संबद्ध अनुसंधान का भी विस्तार होगा। जहां तक कुशल और शिक्षित मानव शक्ति की बात है, मुझे हर क्षेत्र में कुशल और शिक्षित लोगों की कमी दिखलाई पड़ती है। 100 करोड़ से भी ज्यादा की आबादी वाले देश के लिए यह स्थिति अच्छी नहीं है जहां बहुत से लोग अभी भी बेरोजगार हैं या कम आय वाले काम-धंधों में लगे हुए हैं। हमें अपने युवाओं को शिक्षा और लाभकारी रोजगार मुहैया कराने की दिशा में काम करना होगा। हमारी सरकार ने राष्ट्रीय ज्ञान आयोग का गठन किया है ताकि हम सुझाव ले सकें कि हम किस तरह से अपनी शैक्षणिक संस्थाओं को आधुनिक बना सकते हैं, उनका विस्तार कर सकते हैं और उन्हें विश्वस्तरीय बना सकते हैं।

भारत में जल्दी ही युवाओं की सबसे बड़ी फौज खड़ी नजर आएगी। हमें उनकी क्षमताओं में निवेश करना होगा ताकि वे राष्ट्र के लिए परिसम्पत्ति बन सकें। मुझे पूरी उम्मीद है कि अगले दो वर्षों में हम भारत में शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लाने में कामयाब हो जाएंगे। मैं भारतीय उद्योग जगत से आग्रह करता हूं कि वे आगे आएं और इस काम में हमारे हाथ मजबूत करें।

मैं जानता हूँ कि हमें शिक्षा से संबंधित नियमों और विनियमों को और अधिक उदार बनाना होगा ताकि शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी मात्रा में निजी निवेश का मार्ग प्रशस्त हो सके। हमें यह बात भी समझनी होगी कि हमारे शिक्षा के क्षेत्र में अब तक जो भी बड़ी सफलताएं हासिल हुई हैं वे व्यक्तियों की और समूह द्वारा की गई पहलों की और उद्यम की अपनी सफलताएं रही हैं। जहां हमें एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश बढ़ाना होगा वहीं दूसरी ओर, हम शिक्षा क्षेत्र में उच्च निजी निवेश को भी सुकर बना सकते हैं।

हमारी शिक्षा प्रणाली से लाभ उठाने वाले विदेशों में रह रहे बहुत से भारतीयों ने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में निवेश करने की रुचि दिखाई है उससे मुझे बहुत खुशी हुई है। मैं मानता हूँ कि यह सरकार का कर्तव्य है कि वे ऐसी पहलों को सामने लाने का प्रयास करे।

मुझे उम्मीद है कि सुनील मित्तल और भारती फाउण्डेशन ने जो प्रेरणा सबके सामने रखी है, उससे अन्य उद्यमी भी शिक्षा और प्रशिक्षण में सार्वजनिक-निजी भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इस संस्था को राष्ट्र को समर्पित करते हुए और आपके नए परिसर का उद्‍घाटन करते हुए मैं बहुत खुश हूँ।

धन्यवाद।